एकांकी की परिभाषा

एकांकी नाटक का लघु रूप है, जिसमें किसी एक विचार, घटना या भावना को केंद्र में रखकर उसका सजीव नाटकीय रूप प्रस्तुत किया जाता है।

परिभाषा:
"एकांकी वह लघु नाट्य रूप है जो किसी एक प्रमुख घटना, विचार या भावना को सीमित पात्रों, स्थान और समय में प्रस्तुत करता है।"

2. एकांकी की उत्पत्ति और विकास

- एकांकी का विकास पश्चिमी रंगमंच से हुआ। यूरोप में इसे "One-act Play" कहा गया।
- हिंदी में एकांकी का आरंभ 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ।
- प्रारंभ में इसे शिक्षात्मक और सामाजिक उद्देश्य से लिखा गया, बाद में यह एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा बन गया।
- हिंदी एकांकी के जनक माने जाते हैं — उपेन्द्रनाथ अश्क।

3. एकांकी की विशेषताएँ

1. एक ही अंक (Act): इसमें केवल एक अंक होता है, इसलिए इसे "एकांकी" कहा जाता है।
2. एक प्रमुख घटना या विचार: कथा एक ही विचार या घटना के इर्द-गिर्द घूमती है।
3. सीमित पात्र: पात्रों की संख्या बहुत कम होती है — 2 से 5 तक सामान्यतः।
4. सीमित समय और स्थान: कथा एक ही स्थान और अल्प समय में घटती है।
5. संक्षिप्त संवाद: संवाद छोटे, तीखे और प्रभावशाली होते हैं।
6. स्पष्ट उद्देश्य: इसमें कोई न कोई नैतिक, सामाजिक या भावनात्मक संदेश निहित होता है।
7. प्रभावशाली अंत: एकांकी का अंत अचानक होता है परंतु पाठक/दर्शक के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ता है।
8. नाटकीयता: इसमें मंचीयता और अभिनय की पूरी गुंजाइश होती है।

4. एकांकी के अंग (संरचना)

एकांकी की रचना के सामान्य अंग निम्न हैं —

1. प्रस्तावना (Introduction):

   पात्रों, स्थान और घटना का परिचय दिया जाता है।

2. संघर्ष (Conflict):

   कहानी में कोई समस्या या टकराव उत्पन्न होता है।

3. चरमबिंदु (Climax):

   संघर्ष अपनी चरम स्थिति पर पहुँचता है।

4. उत्कर्ष और समाधान (Resolution):

   समस्या का समाधान या किसी निष्कर्ष तक पहुँचकर एकांकी समाप्त होता है।

एकांकी के प्रकार

1. सामाजिक एकांकी – समाज की समस्याओं पर आधारित

   जैसे: पथ का दावेदार

2. ऐतिहासिक एकांकी – ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित

   जैसे: शिवाजी

3. रम्य या हास्य एकांकी – हास्य और मनोरंजन प्रधान

   जैसे: परीक्षा परिणाम

4. सांस्कृतिक/धार्मिक एकांकी – सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित
5. मानसिक/मनोवैज्ञानिक एकांकी – मानवीय भावनाओं और अंतर्द्वंद्व को दर्शाते हैं